अध्यापकों की भूमिका एवं दायित्व Role and liability of teachers

शिक्षा (education)में अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक का कार्य मात्र कक्षा में शिक्षण कार्य करने पर ही समाप्त नहीं हो जाता, बल्कि छात्रों को उचित निर्देशन प्रदान करना, विद्यार्थियों की भावनाओं को समझना, विद्यालय में सामाजिक वातावरण का निर्माण करना, विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं का संचालन करना आदि भी अध्यापक के महत्वपूर्ण कार्य हैं। अध्यापक के कर्तव्य और उत्तरदायित्व को हम निम्नलिखित बिंदुओं मैं अध्ययन कर सकते हैं-

1. शिक्षण Teaching-

शिक्षक का सबसे महत्वपूर्ण कार्य शिक्षण (teaching) का ही होता है। शिक्षक को इमानदारी, मेहनत और लगन के साथ इस कार्य को करना चाहिए। एक अध्यापक यदि अध्यापन कार्य उचित तरीके से नहीं करता तो वह अध्यापक कहलाने के लायक नहीं है। अध्यापक बालकों को औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ अनौपचारिक वह निरौपचारिक शिक्षा भी दें। अध्यापक अपने इस दायित्व का निर्वहन तभी कर सकता है तब, उसे अपने विषय का पूर्ण ज्ञान हो, अपने विषय के संबंध में नवीनतम जानकारी हो, तथा उचित शिक्षण विधि के उपयोग करने की कुशलता हो साथ ही उसमें कर्तव्यनिष्ठ होने की भावना भी होनी चाहिए।

2. कुशल प्रबंधक (Skilled manager) के रूप में-

विद्यार्थियों को विषय की उचित शिक्षा प्रदान करने हेतु उसे उपलब्ध संसाधनों का कुशल तम प्रबंध करना होता है एक प्रबंधक के रूप में शिक्षक चार मुख्य कार्य करता है जो निम्न है-

1). योजना निर्माण Planning-

किसी भी अच्छे शिक्षक के लिए यह आवश्यक है। कि कक्षा में जाने से पूर्व विषय-वस्तु और अनुदेशन सामग्री को क्रमवार रूप से व्यवस्थित करें इसके लिए वह निम्न कार्य कर सकता है जैसे-

- संपूर्ण व्यवस्था विश्लेषण
- कार्य विश्लेषण
- प्रविष्ट व्यवहार का वअभिज्ञान
- उद्देश्य को सूत्रबद्ध करना
- छात्रों की जरूरतों की पहचान करना
- परीक्षण सामग्री निर्माण

2.) व्यवस्था करना to make arrangements-

शिक्षक विद्यालय का अभिन्न अंग होता है। विद्यालय में समस्त क्रियाओं की व्यवस्था और उनका

कुशल संचालन केवल प्रधानाध्यापक का ही कर्तव्य नहीं है,अपितु विद्यालय का अभिन्न अंग होने के कारण विद्यालय के प्रत्येक कार्य समय सारणी बनाना, पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन करना, और संचालन करना आदि में प्रधानाध्यापक का पूर्णतः सहगामी होना एवं उनकी सफलता के साथ पूरा करने का अध्यापक का दायित्व है। इस प्रकार विद्यालय में विभिन्न प्रकार की व्यवस्था बनाए रखने का अध्यापक का महत्व पूर्ण कर्तव्य है।
एक प्रभावशाली पर्यावरण का निर्माण करके वह अपने शिक्षण कौशलों का प्रयोग करता है। जिससे वह एक ध्येय पुष्ठ अधिगम अनुभवों का सृजन कर सकें।

3.) नेतृत्व करना Leadership-

शिक्षक के सम्मुख कक्षा का एक सदस्य होने के साथ-साथ छात्रों को एक नेतृत्व प्रदान करने की भी चुनौती होती है।अपने नेतृत्व में वह छात्रों में ' ज्ञान पिपासु प्रवृतियों' का सृजन करता है। छात्रों को प्रोत्साहित करता है। वह उनके मन में उत्पन्न आकंठ इच्छाओं को दिशा देता है। वह छात्रों के समक्ष पहल करके एक उदाहरण प्रस्तुत करता है।शिक्षक छात्रों की सक्रिय भागीदारी बढ़ाने के उपाय करता है। नेतृत्व प्रदान करने के लिए उसी निम्न कार्य करने पड़ते हैं।

- संप्रेषण आव्यूह का सही चयन करना।
- अभिप्रेरणा और पुनर्बलन का सही सम्मिश्रण करना।

4.) नियंत्रण करना Control-

किसी भी शिक्षक को सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एक नियंत्रक यानी कि कंट्रोलर के रूप में निभानी पड़ती है। अपने निरीक्षण, प्रेक्षण व जाँच द्वारा वह एक नियंत्रक की भूमिका का निर्वहन करता है। नियंत्रक के तौर पर वह निम्न कार्य करता है-

- शिक्षण व्यवस्था का मूल्यांकन करना
- अधिगम व्यवस्था का प्रेक्षण करना
- शिक्षण व्यवस्था का अवशोधन करना